समाजशास्त्र में पीएच० डी० में पंजीयन हेतु प्रस्तुत शोध प्रारूप

विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, झारखण्ड

शोध का शीर्षक

"कोयला श्रमिक एवं उसके परिवारों के सामाजिक -आर्थिक स्थिति का एक समजशास्त्रीय अध्ययन"

(धनबाद जिला के कतरास क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

शोधकर्ताः खेमलाल महतो

शोध निर्देशकः डॉ० दीपक कुमार सिंह

विभागाध्यक्ष विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग

बि० बि० एम० के० यू० धनबाद

---

1. शोध समस्या का विवरण

कोयला खनन उद्योग विकासशील भारत की आधारभूत रीढ़ है। इंग्लैंड में कोयला के कारण ही सदियों पहले औद्योगिक क्रांति संभव हो पाई थी। वहीं भारत में आजादी के बाद कोयला उद्योग ने विकास की धारा को तीव्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोयला उद्योग एक ऐसा उद्योग है जिसपर अन्य उद्योग व निर्माण कार्य निर्भर करता है। लेकिन आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बावजूद भी यह उद्योग बदहाली का शिकार है, क्योंकि आज भी खदानों में सुरक्षित कोयला खनन की विधियों का घोर अभाव दिखाई पड़ता है। बावजूद इसके कोयला खदानों में काम करने वाले श्रमिकों में अपने काम के प्रति समर्पण एवं लगन की भावना कम नहीं है।

श्रमिक से तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जो किसी उद्योग में कौशलपूर्ण या कौशल रहित पर्यवेक्षकीय तकनीक तथा लिपिकीय संबंधी कार्य भाड़े या पुरस्कार भाड़े या पुरस्कार पर कार्य करने के लिए नियोजित होते हैं, चाहे उनके नियोजन की शर्तें स्पष्ट हो या अस्पष्ट हो। अधिनियम के अंतर्गत कर्मकार की परिभाषा में ऐसे व्यक्ति आते हैं जिन्हे किसी विवाद के कारण पदमुक्त नहीं किया गया हो। भारत में अनेक संवैधानिक उपबंधों के बाद भी आजादी के 75 वर्षों के पश्चात भी उनका शोषण अपने चरम पर है तथा श्रमिक

अपने सामाजिक तथा आर्थिक स्तर को जीविकोपार्जन से अधिक ऊपर नहीं उठा पा रही है। भारत जैसे विकासशील देश में यह समस्या विकराल रूप में विद्यमान है तथा सरकार द्वारा बनाए गए कानून केवल कागजों पर ही सिमट कर रह गए हैं। उन्हे धरातल पर व्यवहारिक रूप में लागू नहीं किया जा सका है। श्रमिकों के खराब स्थिति के कारणों में अशिक्षा एक प्रमुख कारक है। समाज के कमजोर वर्ग के लोगों की स्थिति ज्यादा खराब है जो अपने हक के लिए आवाज नहीं उठा सकते। लेकिन फिर भी देखा जाए तो कोयला श्रमिकों की स्थिति दैनिक असंगठित क्षेत्र के मजदूरों से काफी अच्छी है क्योंकि उन्हें प्रत्येक माह एक निश्चित राशि तनख्वा के रूप में कोल कंपनियों के द्वारा प्रदान की जाती है और समय-समय पर महंगाई भत्ता एवं अन्य सुविधाएं कंपनी की तरफ से प्रदान की जाती है। इसके फलस्वरुप कोयला श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक ढांचों में जो परिवर्तन आया है इसका प्रभाव उनके परिवारों पर भी पड़ा है।

कोयला क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं से आकर्षित होकर व्यक्ति अपने मूल परिवार से दूर होकर कोयला क्षेत्र में आए। कोयला श्रमिकों को मिलने वाला पर्याप्त मानदेय के अर्जन से व्यक्ति के रहन-सहन का तौर तरीका बदला तथा उसकी मनोवृति में भी परिवर्तन आने लगा। भौतिक सुख-सुविधाओं एवं आवास-व्यवस्था, मुक्त बिजली-पानी से लाभान्वित व्यक्ति धीरे-धीरे अपने पत्नी तथा बच्चों को भी साथ ले आता है। इस प्रकार कोयला श्रमिक अपने मूल परिवार से हट कर एक नए एकांकी परिवार की स्थापना करता है तथा व्यक्ति अपनी पत्नी एवं बच्चों के अधिकतम सुख-सुविधाओं के प्रति प्रयत्नशील हो जाता है। इस नए परिवार में पत्नी व बच्चों के साथ व्यक्ति का प्रत्यक्ष संबंध स्थापित हो जाता है। स्त्रियां अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र हो जाती है तथा उनका दायित्व भी पति एवं बच्चों की ओर बढ़ जाता है। महिलाओं की अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं। इस प्रकार व्यक्ति अपने एकांकी परिवार के प्रति एक नया दृष्टिकोण विकसित कर लेता है। बच्चों के पालन-पोषण, शिक्षा, रोजगार, विवाह व भविष्य आदि के प्रति भी नया दृष्टिकोण बन जाता है। इस नए विचारों का प्रभाव उसके पारिवारिक संरचना को प्रभावित करता है।

कोयला श्रमिक के इन बदलते विचारों के परिणामस्वरूप उन्हें एकांकी परिवार का विकास एक ऐसे स्वरूप में होता है जो सामान्यतः पति-पत्नी व उनके बच्चों तक सीमित होता है तथा व्यवहारिक दाम्पत्यमूलक संबंधों में ही अपने आधुनिक परिवर्तित कार्यों को संपन्न करता है और इससे उसकी परिवर्तित आकांक्षाएं अधिक स्पष्ट रूप में परिलक्षित होती है। सभी क्रियाकलाप पति-पत्नी के आपसी विचार विमर्श एवं सहयोग पर निर्भर होते हैं।

कोयला श्रमिक के निश्चित आय का उसके परिवार के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। उसके रोजगार का उसके जीवन प्रणाली पर अनिवार्य रूप से दबाव पड़ता है। कार्य का नियमित चक्र, कार्य के घंटे, लंच का समय आदि स्थिति का उसके जीवन पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही साथ आय की मात्रा तथा प्रकार से भी पारिवारिक जीवन प्रभावित होता है। श्रमिक की अपने रोजगार के प्रति उत्पन्न मनोवृति एवं विचार भी उसके जीवन के दृष्टिकोणों को प्रभावित करती है। रोजगार की प्रकृति, उसके जीवन के साथ समायोजन आदि का उसके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है।

कोयला उद्योग के प्रादुर्भाव के कारण श्रम शक्ति की एक बड़ी संख्या खदानों में कार्यरत है। फलस्वरुप श्रम शक्ति और परंपरागत मूल परिवारों के बीच दूरी धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। कार्य की प्रकृति के अनुसार कोयला श्रमिकों के जीवन में भी परिवर्तन आने लगा है। उद्योगवाद में कार्य के स्थान को निवास स्थान से पूर्णतः पृथक कर दिया है जिससे श्रमिक का अपने मूल पारिवारिक सदस्यों के साथ औपचारिक संबंध बनने लगे हैं। उनका संबंध मात्रा आवश्यकता के समय पैसे के लेनदेन तक ही सीमित हो गया है। उद्योगवाद ने सामूहिक कल्याण के स्थान पर व्यक्तिवादी विचारधाराओं में वृद्धि की है जिससे व्यक्ति में धनलोलुपता की भावना काफी तीव्र हुई है।

भारत में कोयला खनन का इतिहास - भारत में कोयले के खनन का इतिहास बहुत पुराना है। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1774 में दामोदर नदी के पश्चिमी किनारे पर रानीगंज में कोयले का वाणिज्यिक खनन आरंभ किया गया। इसके बाद लगभग एक शताब्दी तक अन्य खनन का कार्य अपेक्षाकृत धीमी गति से चलता रहा क्योंकि उसे समय कोयले की मांग बहुत कम थी। किंतु 1853 में भाप से चलने वाली गाड़ियों के आरंभ होने से कोयले की मांग बढ़ गई और खनन कार्य को प्रोत्साहन मिला। इसके बाद कोयले का उत्पादन लगभग 1 मिलियन मीट्रिक टन प्रतिवर्ष हो गया। 19वीं शताब्दी के अंत तक भारत में उत्पादन 6.12 मिलियन मीट्रिक टन वार्षिक हो गया और 1920 तक 18 मिलियन मीट्रिक टन वार्षिक। किंतु 1930 के आरंभिक दशक में फिर से उत्पादन में कमी आ गई। लेकिन 1942 तक उत्पादन 29 मिलियन मीट्रिक टन प्रतिवर्ष तथा 1946 तक 30 मिलियन मीट्रिक टन हो गया। भारत में विश्व का 4.7 प्रतिशत कोयले का उत्पादन होता है।

झारखंड में कोयला खनन - झारखंड में मुख्य रूप से झरिया, धनबाद, बोकारो, जयंती, गोड्डा गिरिडीह, रामगढ़, करणपुरा, डाल्टनगंज तथा देवगढ़ में कोयले की खदानें अवस्थित है। संपूर्ण झारखंड में 113 कोयले की खदानें हैं जो भारत के सभी कोयला खदानों का एक चैथाई या 26% से अधिक है। इन खदानों से प्रतिवर्ष 115 मीट्रिक टन से अधिक

कोयला निकाला जाता है। झारखंड में कोयला खनन उद्योग प्रत्यक्ष रूप से लगभग तीन लाख लोगों को रोजगार दे रहा है। झारखंड राज्य भारत में सबसे अधिक कोयले का उत्पादन करता है। जिसका कुल भंडार लगभग 83.15 बिलियन टन है।

2. उपलब्ध साहित्य की प्रारम्भिक समीक्षा

कोयला खनन उद्योग में झारखंड का स्थान भारत में प्रथम है। भारत के लगभग 26 प्रतिशत कोयला का खनन झारखंड में होता है। इस दृष्टि से शोध करने से पहले शोध विषय के संबंध में प्रारंभिक ज्ञान का होना आवश्यक है। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि इसी के आधार पर हम अंतिम रूप से हम यह निश्चित कर सकते हैं कि हमने जिस शोध विषय का चयन किया है वह शोध कार्य के लिए कितना उपयुक्त है। पूर्वज्ञान के आधार पर ही हम अपने शोध कार्य में होने वाली व्यावहारिक और संभावित कठिनाइयों का सामना कर सकते हैं। कोयला श्रमिक एवं उसके परिवार के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अनेक अध्ययन हुए हैं। जिसका संक्षिप्त विवरण निम्न रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतीय समाज में श्रमिक परिवार का अध्ययन करने वाले विचारकों ने पारिवारिक जीवन की विविधता को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अवधारणाओं का प्रयोग किया है। नीमकाफ ने संभावित संयुक्त परिवार, अवशिष्ट रूप से संयुक्त तथा संभावित एकल परिवार की अवधारणा का प्रयोग किया है। निकोलस ने अव्यवस्थित परिवार एवं केंद्रीय परिवार की अवधारणा का प्रयोग किया है।

एलिन डी० रास ने श्रमिक एवं उसके परिवार से संबंधित प्रथम महत्वपूर्ण अनुभवात्मक अध्ययन किया है। उन्होंने विभिन्न औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों का श्रमिक एवं उसके परिवार पर पड़ने वाले प्रभावों की विवेचना की है।

आर डी० लैम्बर्ट ने पूणा के फैक्टरी श्रमिकों का अध्ययन किया है। इनका अध्ययन परिवार के आकार और संरचना से संबंध महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालता है। लैंबर्ट ने संख्याकीय विधि अपना कर यह स्पष्ट किया है कि पूणा नगर के फैक्ट्री श्रमिकों की जनसंख्या नगर के सामान्य जनसंख्या की तुलना में अत्यधिक भिन्न रही है। उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि श्रमिक परिवारों पर औद्योगीकरण का प्रभाव नहीं पड़ा है।

स्वानेडर के अनुसार किसी उद्योग में संलगन श्रमिक के परिवारों की विशेषता यह होती है कि परिवार दाम्पत्यमूलक संबंधों पर आधारित होता है क्योंकि अब परिवार, संपत्ति, स्थान, भूमि, विस्तृत परिवार या स्थायित्व पर निर्भर करती है। यह पति-पत्नी

की योग्यता पर निर्भर करता है कि वह अपनी कठिनाइयों को जिनका हमारी पारिवारिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है पारस्परिक समझौते से हल करते हुए एक दूसरे के साथ समायोजित हो क्योंकि यह सब दाम्पत्यमूलक संबंधों पर ही आधारित होता है।

उद्योगवाद के फलस्वरूप विस्तृत परिवार बिखर जाते हैं। प्रायः एक विस्तृत परिवार कई स्थानों पर बिखरा होता है तथा इसके घटक विभिन्न भागों में, विभिन्न नगरों में, कभी-कभी विभिन्न देशों में भी रह सकते हैं। इससे संबंधियों के बीच बंधन कमजोर हो जाते हैं और कई स्थितियों में पूर्णतः लुप्त हो जाते हैं। फलस्वरुप शक्तिहीन होता वह परिवार पुनः छोटे परिवारों को भी कमजोर कर देता है।

एम० सिंगर के अनुसार औद्योगिक रोजगार का व्यक्ति तथा उसके परिवार के सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है। श्रमिक वर्ग यह स्वीकार करता है कि उसके रोजगार का उसकी जीवन-प्रणाली पर अनिवार्य रूप से दबाव पड़ता है। कार्य के नित्यचक्र, कार्य करने के घंटे, लंच का समय, रोजगार के दिन आदि स्तिथियों का उनके जीवन पर प्रभाव पड़ता है। जैसे आय का मात्र तथा प्रकार, श्रमिक क्या खाता है, कैसे खाता है, वह कैसे कपड़े पहनता है, कहाँ रहता है, कितने पैसे की वह बचत करता है, क्या खर्च करता है आदि बातों का उसके पारिवारिक जीवन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

कुरैशी ममकुट्टय ने अपने पुस्तक में बताया है कि इस हाईटेक होते समाज के अन्तर्गत न केवल पूरुष श्रमिक अपितु महिला श्रमिकों की सामाजिक हैसियत में सुधार तथा उन्हे रोजगार एवं शिक्षा का अधिकार एवं पूरूषों के बराबर राजनीतिक अधिकार प्रदान करने जैसे सदियों से चली आ रही सामाजिक व्यवस्था पर गंभीर चोट करते हुए बहस छिड़ी हुई है। श्रमिकों की बदहाली का मुख्य कारण ज्यादातर स्तिथियों में सरकार की गलत नीतियाँ ही जिम्मेवार है।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरुप विश्व के विभिन्न समाजों में उद्योग स्थापित करने की गति अत्यंत तीव्र हो गई। इसका मुख्य परिणाम यह हुआ कि आधुनिक समाज में निरंतर गतिशीलता बढ़ने लगी जिसके फलस्वरूप समाज में प्रचलित विश्वासों तथा मूल्य में परिवर्तन आने लगा। व्यापक शिक्षा व्यवस्था, गतिशील संस्तरण-व्यवस्था, ग्रामीण जनसंख्या का नगरों की ओर प्रवास, जटिल संगठनों का विश्वास, भौतिकवादी मूल्य व्यवस्था, विशाल स्तर पर उत्पादन, बाजार तथा व्यापार औद्योगिक श्रमिक समाज में निहित होती है। यह सभी तत्व न केवल श्रमिक के सामाजिक आर्थिक जीवन को प्रभावित करती है अपितु समाज के समस्त उप-व्यवस्थाओं को उथल-पुथल कर देती है।

3. समस्या की जांच

प्रत्येक अनुसंधान की अपनी कुछ विशिष्ट या सरल समस्याएं होती हैं। अनुसंधान की सार्थकता समस्या के चयन पर निर्भर करता है। श्रमिक अपने ड्यूटी के दौरान धूल मिट्टी से भरे स्थानों में रहते हैं। चूँकि ऐसा स्थान उनके रोजगार का एक हिस्सा होता है अतः अब इससे बचने का कोई वैकल्पिक उपाय भी नहीं कर सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से जिन विश्लेष्य बिंदुओं का समस्या के रूप में पहचान का प्रयास किया गया है उनमे प्रमुख निम्न हैः- कोयला खनन से जुड़े एक तिहाई मजदूरों की बीमारी का कारण प्रदूषण होता है। इन बीमारियों के कारण 28 फीसदी श्रमिक सिलिकॉसिस से पीड़ित होते हैं तथा 25 प्रतिशत श्रमिक स्वास्थ्य संबंधी रोग से पीड़ित होते हैं।

खनन कार्य खतरनाक होता है। हर साल सैकड़ों कोयला श्रमिक अपनी जान गंवा देते हैं या गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं। खदानों में छत का गिरना, चट्टान का फटना, आग और विस्फोट से अनेक श्रमिक अपनी जान गंवा देते हैं। खनन गतिविधियों के कारण हवा, पानी, शोर, मिट्टी, भोजन में प्रदूषण और जहरीले कणों के पाए जाने के परिणाम स्वरुप श्रमिकों एवं उनके परिवारों को कई प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है।

4. शोध कार्य का उद्देश्य

प्रत्येक शोध का कोई-न-कोई उद्देश्य आवश्यक होता है जो शोध कार्य को दिशा प्रदान करते हैं तथा उचित निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता प्रदान करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में कोयला श्रमिक एवं उसके परिवार के सामाजिक आर्थिक स्थिति से संबंधित कुछ उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं जो निम्न हैः-

- कोयला श्रमिक एवं उसके परिवार का सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- श्रमिक एवं उसके परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्थिति में हो रहे परिवर्तन का अध्ययन करना।
- सामाजिक-आर्थिक स्थिति में हो रहे परिवर्तन की दशा एवं दिशा का अध्ययन करना।
- श्रमिक परिवार के महिलाओं की एवं महिला श्रमिक के सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

- परिवार के सामाजिक-आर्थिक निर्णय में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययन करना।

5. उपकल्पना

प्रस्तुत शोध का विषय श्रमिक एवं उसके परिवारों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति का एक समजशास्त्रीय अध्ययन है। सामाजिक शोध में अध्ययन विषय से संबंधित किसी एक या एक से अधिक परिकल्पनाओं अथवा उपकल्पनाओं का निर्माण करना आवश्यक होता है। उपकल्पना अध्ययन के प्रारंभ ही लिया जाने वाला एक ऐसा सामान्य निष्कर्ष है जिसकी प्रमाणिकता की जांच बाद में एकत्रित किए गए तथ्यों के आधार पर की जाती है। इसे शोध प्रारंभ करने का प्रथम बिंदु भी कहते हैं। इसी के माध्यम से शोध कार्य प्रारंभ होता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए भी कुछ उपकल्पनाओं का निरूपण किया जाता है जो निम्न हैः-

- श्रमिक एवं उसके परिवार का सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि बदल रही है।
- श्रमिक एवं उसके परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्थिति में प्रत्यक्ष एवं स्पष्ट परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं।
- श्रमिक परिवार के स्थिति में साकारात्मक परंतु धीमी गति से बदलाव हो रहा है।
- श्रमिक परिवार के महिलाओं एवं महिला श्रमिक की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है।
- पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है।

6. अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन “कोयला श्रमिक एवं उसके परिवारों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन” के लिए अध्ययन क्षेत्र के रूप में बीसीसीएल के कतरास एरिया को लिया गया है। जो बीसीसीएल अर्थात भारत कोकिंग कोल लिमिटेड की एक इकाई है। वर्तमान में कतरास एरिया में कुल 3 कोलियरी विद्‌यमान है।

(क) एकीकृत वेस्ट मुदीडीह-केशलपुर कोलियरी - एकीकृत वेस्ट मुदीडीह-केशलपुर कोलियरी एक चालू मिश्रित खदान है, प्रतिवर्ष 4.4 मिलियन टन इसकी मानक उत्पादन क्षमता है। एकीकृत वेस्ट मुदीडीह-केशलपुर कोलियरी में वाशरी ग्रेड-IV प्रकार की कोयला का खनन किया जाता है। वर्तमान में इसके परियोजना पदाधिकारी श्री सत्येन्द्र सिंह है। इस

परियोजना क्षेत्र में कुल 2605 श्रमिक कार्यरत हैं जिसमें से 2317 संगठित श्रमिक एवं 288 असंगठित श्रमिक हैं।

(ख) एकीकृत गजलीटांड़ कतरास चैतुडीह कोलियरी - एकीकृत गजलीटांड़ कतरास चैतुडीह कोलियरी एक चालू खुली खदान है, प्रतिवर्ष 0.4 मिलियन टन इसकी मानक उत्पादन क्षमता है। एकीकृत गजलीटांड़ कतरास चैतुडीह कोलियरी में स्टील ग्रेड-I प्रकार की कोयला का खनन किया जाता है। वर्तमान में इसके परियोजना पदाधिकारी श्री मोहन मुरारी है। इस परियोजना क्षेत्र में कुल 403 श्रमिक कार्यरत हैं जिसमें से 169 संगठित श्रमिक एवं 234 असंगठित श्रमिक हैं।

(ग) सलानपुर कोलियरी - सलानपुर कोलियरी एक चालू भूमिगत खदान है, प्रतिवर्ष 0.12 मिलियन टन इसकी मानक उत्पादन क्षमता है। सलानपुर कोलियरी में वाशरी ग्रेड-IV प्रकार की कोयला का खनन किया जाता है। वर्तमान में इसके परियोजना पदाधिकारी श्री इलियास अंसारी है। इस परियोजना क्षेत्र में कुल 217 श्रमिक कार्यरत हैं।

7. अनुसंधान पद्धति

सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र में अनुसंधान पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान होता है। ऐसा इसलिए क्योंकि अनुसंधान पद्धति के सहारे ही सामाजिक अनुसंधान में वैज्ञानिकता लाया जा सकता है। अनुसंधान ज्ञान को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से किसी घटना का गहन और सावधानीपूर्वक किया गया अन्वेषण है। सामाजिक अनुसंधान वह अनुसंधान है जो सामाजिक समूहों या सामाजिक अंतःक्रियाओं की प्रक्रियाओं के अध्ययन पर ध्यान देता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होगा। इसमें वर्णनात्मक, ऐतिहासिक एवं पुस्तकालय विधि आदि का अनुसंधान हेतु प्रयोग किया जाएगा। वैज्ञानिक अनुसंधान में तथ्यों का अवलोकन या लोगों से संपर्क निहित होता है। साथ ही वैज्ञानिक अनुसंधान अनुभव के आधार पर पुष्टनीय तथ्यों के संग्रह के द्वारा ज्ञान का निर्माण करता है।

8. शोध प्ररचना

शोध प्ररचना या शोध अभिकल्प समस्या से संबंधित उद्देश्यों और उपकल्पनाओं से लेकर आंकड़ों के अंतिम विश्लेषण तक उन सभी क्रियाओं की योजना का रूपरेखा है जो शोध प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु की जाती है। साधारणतः जब एक निश्चित रूप रेखा

तैयार कर किसी शोध कार्य को आरंभ किया जाता है तो इसे ही शोध प्ररचना की संज्ञा दी जाती है। प्रस्तुत शोध के लिए भी एक प्ररचना तैयार किया गया है जो समस्या के प्रकृति एवं उद्देश्य पर आधारित है। प्रस्तुत शोध के अंतर्गत अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप का चयन किया जाएगा क्योंकि प्रस्तुत शोध की प्रकृति अन्वेषणात्मक है।

9. तथ्य संकलन के लिए प्रयोग किए जाने वाला उपकरण एवं तथ्य विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों के आंकड़े संग्रह किए जाएंगे। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत अवलोकन, साक्षात्कार तथा अनुसूची विधि का प्रयोग किया जाएगा एवं द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत जनगणना, आंकड़ा, पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों एवं सरकारी दस्तावेजों का प्रयोग किया जाएगा। निदर्शन पद्धति के अंतर्गत दैव निदर्शन विधि द्वारा कुल 300 सूचनादाताओं का चयन अध्ययन के लिए किया जाएगा। जिसमें से प्रत्येक कोलियरी से 100-100 सूचनादाताओं को अध्ययन हेतु लिया जाएगा एवं उसमें से भी 50 महिला श्रमिक एवं 50 पुरुष श्रमिकों का चयन किया जाएगा। दैव निदर्शन विधि के अंतर्गत लॉटरी विधि द्वारा इकाइयों का चयन किया जाएगा ताकि अध्ययन के इकाइयों के चयन में पक्षपात ना हो। अवलोकन विधि के अंतर्गत प्रस्तुत अध्ययन में अर्द्ध-सहभागी अवलोकन का प्रयोग किया जाएगा तथा साक्षात्कार विधि के अंतर्गत संरचित साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया जाएगा, जिसमें पूर्व निश्चित प्रश्न एवं विकल्पों में से उत्तरदाताओं को जवाब देना होता है।

प्रस्तुत अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से कोयला श्रमिक एवं उसके परिवार से जो सूचनाएँ प्राप्त होंगी उन्हें वर्गीकृत किया जाएगा। तथ्यों को स्वतंत्र एवं परतंत्र चरों में रखकर उनके अन्तः संबंधों को विश्लेषित किया जाएगा। आयु, जाति, लिंग, आय और शैक्षणिक योग्यता आदि को अध्ययन के अंतर्गत स्वतंत्र चर के रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। विभिन्न सारणियों के अंतर्गत तथ्यों की सार्थकता और उनकी तुलनात्मक स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए संबंधित आंकड़ों के साथ-साथ उनका प्रतिशत विवरण भी दिया जाएगा। इसके अलावा सरल सारणियों के साथ-साथ बहुचरीय सारणियों का भी प्रयोग किया जाएगा।

10. प्रस्तावित शोध कार्य का महत्व

प्रस्तुत शोध कोयला श्रमिक एवं उसके परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्थिति का पता लगाने के उद्देश्य से प्रेरित है। उल्लेखनीय है कि व्यक्ति के रोजगार की दशा यथा उसके

कार्य की अवधि, छुट्टी, आराम करने का समय, कार्य स्थल का माहौल, कार्यस्थल का वातावरण आदि स्थितियों का प्रभाव श्रमिक पर पड़ता है और इसका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव उनके परिवारों को भी प्रभावित करता है। इसके अलावा आय की मात्रा, कार्य के प्रति श्रमिक की मनोवृत्ति, उसके एवं उसके परिवार की जीवन के दृष्टिकोण को प्रभावित करती है। इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत शोध बहुत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के माध्यम से उपरोक्त बातों की चर्चा विशेष रूप से की जाएगी और अध्ययन के महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा।

11. शोध की सीमाएं एवं भविष्य के कार्य

किसी भी ऐसे कार्य का संपादन करने में कुछ कठिनाइयां अवश्य आती है जो व्यक्ति विशेष द्वारा दूसरों पर परीक्षा कर किसी निष्कर्ष को या तथ्य को हासिल करने के लिए किया जाता है। सामाजिक शोध समाज के अंतर्गत किया जाने वाला ऐसा ही कार्य है जिसमें कुछ-न-कुछ जटिलतायें या कठिनाइयाँ अवश्य विद्यमान रहती है। सामान्यतः प्राकृतिक विज्ञानों की भांति सामाजिक विज्ञानों में प्रयोग नहीं के बराबर होता है। इसलिए कार्य-कारण संबंधों की खोज में समस्या आती है। इसके अलावा सामाजिक घटनाओं तथा समस्याओं की प्रकृति सदैव परिवर्तनशील होती है, जो निरंतर समय के अनुसार बदलती रहती है इसलिए किसी निश्चित निष्कर्ष तक नहीं पहुंचा जा सकता है। सामाजिक शोध में सामाजिक संबंधों में व्यवहारों तथा मानवीय प्रवृत्ति का अध्ययन किया जाता है लेकिन इसकी प्रकृति गुणात्मक होती है जिसकी माप संभव नहीं है। सामाजिक शोध में मुख्य रूप से इन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन श्रमिक एवं उसके परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन भविष्य में काफी उपयोगी साबित होगा। क्योंकि झारखंड निर्माण के बाद कोयला श्रमिक एवं उसके परिवार के सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर इस प्रकार का कार्य पहली बार हो रहा है। भविष्य में इस प्रकार के शोध कार्य के लिए यह अध्ययन एक पथ प्रदर्शक का कार्य करेगा।

12. संभावित अध्याय

अध्याय एक - भूमिका

अध्याय दो - अध्ययन क्षेत्र एवं शोध प्रविधि

अध्याय तीन - पूर्व अध्ययनों की समीक्षा

अध्याय चार - कोयला श्रमिक एवं उसके परिवारों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

अध्याय पाँच - तथ्यों का संकलन एवं विश्लेषण

अध्याय छ रू - कोयला श्रमिक एवं उसके परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति

अध्याय सात - निष्कर्ष एवं सुझाव

परिशिस्ट

साक्षात्कार अनुसूची

संदर्भ ग्रंथों की सूची

संदर्भ ग्रंथ -

- ब्लमर, एम० आई, सोसिओलॉजिकल मोडेल ऑफ द माइनिंग कम्यूनिटी, द सोसिओलॉजिकल रिव्यू 1975।
- रंजन, राजीव. आसमां में सुराख: कोयला कर्मियों की कहानी, नेशन प्रेस मीडिया प्राइवेट लिमिटेड, 2021।
- सिंह, राममूर्ति. एवं देवव्रत, चंद्र, कोयला एक परिचय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग, भारत सरकार 1999।
- चैधरी, बी० डी०, श्रम अर्थशास्त्र तथा मजदूर नीति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना 1990।
- कोचर, दिनेश चंद्र, औद्योगिक मनोविज्ञान, रिसर्च पब्लिकेशन्स नई दिल्ली 1984।
- जॉन मर्फी, कम्यूनिटी एण्ड स्ट्रगलः ए सोसिओलॉजिकल स्टडी ऑफ माइनिंग विलेज इन द 1980, पी० एच० डी० थेसिस, यूनिवर्सिटी ऑफ बारविक।
- सिंगर, एम०, द इंडियन फेमिली इन मॉडर्न इंडस्ट्री इन स्ट्रक्चर एण्ड चेंज इन इंडियन सोसाइटी, एल्डिन पब्लिशिंग कंपनी, शिकागो 1968।
- डीवर, ई० डी०, फेमिली स्ट्रक्चर एण्ड सोसिओ-इकोनोमिक स्टडी इन सेंट्रल इंडिया, सोसिओलॉजिकल बुलेटिन, वॉल्यूम न० 1,2 मार्च- सेप्टम्बर-1969।
- लैम्बर्ट, आर० डी०, वर्कर्स फैक्ट्रीज एण्ड सोशल चेंज इन इंडिया, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बॉम्बे-1963।
- लिप्टेस, एस० एम०, बेनडिक्स, आर० सोशल मोबिलिटी इन इन्डस्ट्रीअल सोसाइटी, यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफॉर्निया प्रेस क्लब बर्फले एण्ड लॉस एंजल्स 1956।
- बर्ज, जेनी, लेबर मार्केट इन्स्टिच्यूशन एण्ड इनीइक्वालटी (एडिटेड बुक) एडवर्ड एल्गर पब्लिशिंग लिमिटेड, यू० के०।
- कुरैशी, ममकुट्टय, लेबर एण्ड चेंज एशेज ऑन ग्लोबलाईजेशन टेक्नॉलजिकल चेंज एण्ड लेबर इन इंडिया (रीस्पान्स बुक्स) ए डिविजन ऑफ सेज पब्लिकैशन लंदन 2003।
- प्रभु, के० के०, हेल्थ सिक्युरिटी फॉर इंडियाज कोल वर्कर्स, द इंडियन जर्नल ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम-39, न०-4।
- आहूजा, राम, सामाजिक सर्वेक्षण एवं सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकैशन, जयपुर- 2001।
- बर्नस, रॉबर्ट बी०, इन्ट्रोडक्शन टू रिसर्च मेथड्स (फोर्थ एडिशन) सेज पब्लिकैशन लंदन 2000।

- मैनहीम, हेनरी आई०, सोसिओलॉजिकल रिसचरू फिलोसोफी एण्ड मेथड्स, द डोरसी प्रेस इलिनोइज 1977।
- कपाड़िया, के० एम०, द फेमिली इन इंडियाः द फेमिली इन ट्रांजिशन, सोसिओलॉजिकल बुलेटिन 1969।
- गेरे, एम० एस०, अर्बनाइजेशन एण्ड फेमिली चेंज इन इंडिया, पोपुलर प्रकाशन बॉम्बे 1968।
- वेबर, मैक्स, द थियोरि ऑफ सोशल एण्ड इकोनोमिक ऑर्गनाइजेसन, द फ्री प्रेस लंदन।
- गिरी, बी० बी०, लेबर प्रॉब्लमस इन इंडियन इंडस्ट्रीज, थर्ड एडिशन, एशिया पब्लिशिंग हाउस बॉम्बे 1972।

शोधकर्ताः खेमलाल महतो **शोध निर्देशकः डॉ० दीपक कुमार सिंह**

****